श्रीलक्ष्मी

प्रचुरता व मांगल्य की देवी

मधुलिका खण्डेलवाल द्वारा लिखित

देवी श्रीलक्ष्मी को सम्पूर्ण भारत में प्रचुरता, मांगल्य व सौन्दर्य की देवी के रूप में पूजा जाता है। 'लक्ष्मी' यह नाम संस्कृत के शब्दों, 'सौभाग्य', 'समृद्धि' व 'सौन्दर्य' का पर्यायवाची है। 'श्री' यह संज्ञा मांगल्य व प्रचुरता के तत्त्व की द्योतक है और यह देवी लक्ष्मी का एक नाम भी है। देवी महालक्ष्मी अपने भक्तों पर उदारतापूर्वक अनेकानेक प्रकार के उपहारों की वर्षा करती हैं—वे प्रचुर आशीर्वाद प्रदान करती हैं, कल्याण, समृद्धि व सौभाग्य लाती हैं और ज्ञान प्रदान करती हैं। सिद्धयोगी के रूप में हम यह समझ सकते हैं कि जो समृद्धि देवी महालक्ष्मी प्रदान करती हैं वह बाह्य सम्पदा होने के साथ-साथ आन्तरिक सम्पदा भी है; वे हमें सम्बल प्रदान करती हैं ताकि हम एक सुन्दर संसार की रचना कर सकें, अपने अन्तर में भी व अपने चारों ओर भी। हमारे अन्तर्जात सद्गुण श्रीलक्ष्मी के दिव्य गुणों को प्रतिबिम्बित करते हैं और जब हम इन दिव्य गुणों की पुष्टि करने व अपने कर्मों द्वारा उनका विकास करने का स्वप्रयत्न करते हैं तब वे हमें साधना के फलों के रूप में अपने आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

ऐसा माना जाता है कि महालक्ष्मी का प्रादुर्भाव क्षीरसागर के मन्थन से हुआ था। इस मन्थन का वर्णन भारत की एक पौराणिक कथा में किया गया है जिसमें अमृत प्राप्त करने के लिए देवों व दानवों के बीच के संघर्ष को दर्शाया गया है। जब महालक्ष्मी समुद्र-मन्थन से प्रकट हुईं तो सभी देव तथा दानव देवी के इस दिव्यातिदिव्य, अतीव सुन्दर व कृपालु स्वरूप को देखकर श्रद्धा व आदर से भरकर आश्चर्यचकित रह गए। यह सागर-मन्थन अपने आन्तरिक दानवों के वशीभूत होने व अपने सद्गुणों को सशक्त करने के बीच के संघर्ष का प्रतीक है और महालक्ष्मी, ईश्वर की कृपा की प्रतीक हैं जो हमारे आन्तरिक सद्गुणों का रक्षण करती हैं व दिव्य शक्ति के रूप में उन्हें बनाए रखती हैं।

शास्त्रीय रूप से श्रीलक्ष्मी की छवियों में उन्हें परम चिति के सागर से प्रकट होते हुए दर्शाया जाता है जिसमें वे कमलपुष्प पर दृढ़ता से प्रतिष्ठित हैं; कमलपुष्प पवित्रता व आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतीक है। बल के प्रतीकरूप हाथियों को उनकी पूजा करते हुए दिखाया जाता है। देवी लक्ष्मी के अनेक हाथ हैं और अपने प्रत्येक हाथ में वे एक-एक प्रतीकात्मक वस्तु धारण किए हुए हैं : शत्रुओं के विनाश हेतु चक्र; एक पुष्प जो यह दर्शाता है कि वे ज्ञान प्रदान करती हैं; एक शंख जिसके द्वारा वे मांगलिक घोषणाएँ करती हैं और नित्य प्रवाहित होती स्वर्ण मुद्राएँ जो उनके द्वारा प्रदत्त हर प्रकार

की समृद्धि का प्रतीक हैं। श्रीलक्ष्मी की आराधना करने वाले इस संकल्प के प्रति वचनबद्ध होते हैं कि देवी हमारे जीवन में जो प्रचुरता व सुन्दरता लाती हैं, उसे वे बनाए रखेंगे। अन्य सभी देवी-देवताओं की तरह महालक्ष्मी का भी एक वाहन है, उलूक, जो सतर्कता व बुद्धिमत्ता का प्रतीक है।

महालक्ष्मी, सृष्टि के पालनकर्ता भगवान श्रीविष्णु की नित्यसंगिनी हैं, और उनकी सृजनात्मक शक्ति के रूप में वे भगवान विष्णु के दिव्य उद्देश्य की पूर्ति करती हैं। पारम्परिक रूप से उन्हें आठ स्वरूपा 'अष्टलक्ष्मी' के रूप में जाना जाता है और इनमें से हर स्वरूप उनकी अनन्त कृपा के एक पहलू का द्योतक है। उदाहरण के लिए, श्रीआदिलक्ष्मी के रूप में वे हर जड़ पदार्थ व चेतन जीवों के मूल में विद्यमान हैं; श्रीविजयलक्ष्मी के रूप में वे अपने भक्तों के संघर्षों में उन्हें शुभाशीष देती हैं और विजय व सफलता प्रदान कराती हैं। महालक्ष्मी का एक अन्य स्वरूप, श्रीसन्तानलक्ष्मी का है जिसमें वे एक करुणामयी माँ हैं जो अपने बच्चों की प्रबल रक्षक हैं। सिद्धयोग पथ पर हम गुरुमाई चिद्विलासानन्द के जन्मदिवस के माह, जून में अष्टलक्ष्मी की आराधना करते हैं।

युगों-युगों से, भारत के ऋषि-मुनियों व सन्तों ने देवी लक्ष्मी की स्तुति में अनेक भजनों व गीतों की रचना की है जिनमें उन्होंने देवी की सुन्दरता का सम्मान करते हुए उनकी उदारता व करुणा का गुणगान किया है। महालक्ष्मी के कल्याणकारी, उदार स्वरूप पर केन्द्रण कर हम दिव्य अलौकिक ब्रह्माण्डीय शक्ति के प्रकटरूप में इन देवी का सम्मान व आवाहन करते हैं।

श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम् का श्लोक ७ कहता है :

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते
महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

हे देवी, आप कमल के आसन पर विराजित, साक्षात् परब्रह्मस्वरूपिणी हैं।
सम्पूर्ण जगत की माता,
हे परमेश्वरी महालक्ष्मी, मैं आपको नमन करता हूँ॥[१]

अनेक लोग प्रतिदिन महालक्ष्मी के रूप में परमेश्वरी भगवती की पूजा करते हैं; तथापि, नवरात्रि व दीपावली के पर्वों के दौरान उनकी विशेषरूप से आराधना की जाती है। दीपावली वह त्यौहार है जब हम अपने घरों व जीवन को प्रकाशित करने वाले ईश्वरीय प्रकाश का उत्सव मनाते हैं। सत्य के साधकों के लिए, प्रेम व भक्तिपूर्वक महालक्ष्मी की आराधना करने का उनकी साधना में, आध्यात्मिक यात्रा में अत्यन्त महत्त्व है। श्रीमहालक्ष्मी के प्रति भक्ति को अभिव्यक्त करना यानी उस अन्तर्निवासी

भगवती कुण्डलिनी शक्ति के एक रूप का सम्मान करना जिसे सिद्धयोग के श्रीगुरु जाग्रत करते हैं और जो जीवन्त कृपा के रूप में अन्तर से हमारी साधना को निरन्तर मार्गदर्शित करती है।

नवरात्रि के इस पर्व के दौरान, हम 'श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम्' जैसी स्तुतियों का पाठ कर श्रीमहालक्ष्मी का सम्मान कर सकते हैं, प्रकृति में व्याप्त उनकी उपस्थिति की अभिस्वीकृति कर सकते हैं और अपने दैनिक जीवन के समस्त कार्यकलाप में सद्गुणों को विकसित कर सकते हैं।

---

[१] श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम्; स्वाध्याय सुधा [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१६], पृ. २१९।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।